International Journal of Applied Research 2021; 7(9): 183-185

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(9): 183-185
www.allresearchjournal.com
Received: 10-07-2021
Accepted: 19-08-2021

अभिनन्दन पाण्डेय
शोध छात्र दर्शन एवं संस्कृति विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
अभिनन्दन पाण्डेय
शोध छात्र दर्शन एवं संस्कृति विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

कांट का कर्तव्य के लिए कर्तव्य का सिद्धान्त

अभिनन्दन पाण्डेय

सारांश
कर्तव्य के मूल्य का यद्यपि सभी युगों में भूमिका रही लेकिन आज उसके बिना अधिकार की मांग भी नही की जा सकती। कांट के दर्शन ने पाश्चात्य जगत में इसे प्रकाश स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किया।
कांट–''नैतिक नियम के प्रति सम्मान की भावना से प्रेरित होकर इसी नियम के अनुरूप कर्म करने की अनिवार्यता ही कर्तव्य है।'

कूटशब्दः कर्तव्य के लिए कर्तव्य, सदिच्छा, पूर्णबंधी कर्तव्य, अपूर्णवधीं कर्तव्य्

प्रस्तावनाः
सामान्यतः कांट ने भी मनुष्य के समस्त कर्तव्यों की सर्वप्रथम दो वर्गों में विभाजित किया है–
1. पूर्ण बंधी कर्तव्य
2. अपूर्णबंधी कर्तव्य

पूर्णबंधी कर्तव्य–
पूर्णबंधी कर्तव्य वे कर्तव्य होते है जिनका प्रत्येक मनुष्य के लिए सभी परिस्थितियों में पालन करना आवश्यक होता है। इसमें किसी भी प्रकार का किन्तु परन्तु नहीं होता है। उदाहरणः–यदि आप किसी से कर्ज लिए है तो कर्ज चुकाना पूर्णबंधी कर्तव्य है जिसका सदैव पालन करना आवश्यक है। इसका एक अन्य उदाहरण है कि मनुष्य को आत्महत्या नहीं करनी चाहिए यह भी यानी आत्महत्या न करना भी एक पूर्णबंधी कर्तव्य है, क्योंकि आत्म हत्या से पहले आपको अपने मानव जीवन का मूल्य, समाज के प्रति कर्तव्य, परिवार के प्रति कर्तव्य राष्ट्र के प्रति कर्तव्य इत्यादि इनकी भी नैतिक जिम्मेदारी आप सब की है, यानी कि पूर्णबंधी कर्तव्य में मनुष्य को किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं है। हमें किसी भी परिस्थिति में पूर्णबंधी कर्तव्य का अवश्य पालन करना चाहिए।

पेटन–''कांट के इन कर्तव्यों को 'कठोर कर्तव्य' की संज्ञा देते है।''

अपूर्णबंधी कर्तव्यः–
अपूर्णबंधी कर्तव्य वे कर्तव्य है, जिनमें कुछ बाध्यता कम या थोड़ी स्वतंत्रता होती है और ये पूर्णबंधी कर्तव्य से कुछ कम कठोर होते है। जैसे–मनुष्य अपनी बौधिक क्षमताओं का अधिकतम विकास करना या किसी विशेष कौशल को सीखना। एक अन्य व्यवहारिक उदाहरण जैसे कि किसी राज्य में कोई आपदा जैसे बाढ़, भूकम्प आया है तो हम पहले अपनी मदद करने की क्षमता को देखकर ही उस राज्य में मदद की सामग्री भेजेंगे यह अपूर्ण बंधी कर्तव्य है, और अपूर्णबंधी कर्तव्य स्पष्ट व निश्चित नहीं है जबकि पूर्ण बंधी कर्तव्य पूर्णतः निश्चित है।
लेकिन कांट अपनी नैतिकता में पूर्ण बंधी कर्तव्य का जिस तरह मनुष्य पालन करता है अपूर्ण बंधी कर्तव्य का भी उसी प्रकार पालन करना चाहिए।
कांट ने बुद्धि के निरपेक्ष आदेश को कर्तव्य के लिए कर्तव्य के रूप में परिभाषित किया, कांट की दृष्टि में नैतिकता स्वतः साध्य व साधन दोनो है जिस प्रकार गांधी जी के दर्शन में गांधी जी साधन भी उतना पवित्र होना चाहिए जितना साध्य।

कांट के अनुसार कर्तव्य को एक अन्य प्रकार से भी वर्गीकरण करते है–
1. दूसरों के प्रति कर्तव्य
2. अपने प्रति कर्तव्य

यही रूप जब हम पूर्णबंधी कर्तव्य में भी पाते है व अपूर्णबंधी कर्तव्य में भी। उदाहरणः–वचन न भंग करना पूर्णबंधी कर्तव्य दूसरों के प्रति है जबकि आत्महत्या न करना स्वयं के प्रति इसका एक व्यवहारिक उदाहरण कि गंगा नदी में दूसरे अगर अपना स्नान करने के बाद कपड़ा धुले तो उन्हें मना करना दूसरे के प्रति कर्तव्य है तथा स्वयं गंगा नदी को किसी भी प्रकार से गंदा न करना स्वयं के प्रति कर्तव्य में।
इसका एक अन्य उदाहरण जैसे–गरीब की सहायता या मदद करना दूसरे के प्रति कर्तव्य है जबकि अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकास करना अपने प्रति अपूर्णबंधी कर्तव्य है।
कांट के कर्तव्य में एक अन्य प्रकार की बाध्यता या अनिवार्यता सुनिश्चित की जाती है जिसके कारण मनुष्य की इच्छा अगर न भी हो तो भी उसे अपने कर्तव्य का पालन करने में एक उत्प्रेरक के रूप में होता है।
कांट का नैतिक जीवन स्वशासित जीवन है, नैतिक आदेश बुद्धि का आदेश है। मनुष्य के जीवन का ध्येय सद्गुण होना चाहिए न कि सुख। व्यवहारिक बुद्धि स्वयं अपने नियमों को स्वयं पर लागू करती है नैतिक जीवन में भावना का कोई स्थान नहीं है।

कांट–''सदिच्छा ही ऐसा रत्न हैं जो अपने ही प्रकाश में चमकता है।
कांट का कर्तव्य नैतिक कठोरतावादी, स्वनिर्धारणवादी, अपरिणाम वादी एवं आदर्शवादी है। कांट के कर्तव्य का मूल्य उसके परिणाम पर न निर्भर होकर हेतु पर निर्भर है, कर्म करने में केवल एक ही उचित प्रेरक कारण हो सकता है। जो भी कर्तव्य के नैतिक नियम है उनका पालन इसलिए नहीं होना चाहिए कि वह भावनावश है बल्कि कर्तव्य की लिए कर्तव्य के दृष्टि से होना चाहिए।
कर्तव्य व कर्म में अन्तर होता है क भी–कभी मनुष्य भ्रम कर्म व कर्तव्य को एक ही समझ लेता है कर्म तो प्रत्येक व्यक्ति के निश्चित और अनिश्चित होते है जबकि कर्तव्य निश्चित होते है।
कर्म एक से अधिक होते है एक किसी परिस्थिति में लेकिन उसी परिस्थिति में कर्तव्य केवल एक ही होता है।
नैतिक नियम सार्वभौम है। कर्तव्य सभी परिस्थिति में अनिवार्य है।

कांट मानवीय कर्म के तीन प्रकार बताते है–

- तात्कालिक संवेग इच्छा
- अपने कल्याण के लिए सोच समझकर किया जाने वाला कर्म।
- केवल अपने कर्तव्य का पालन करने की चेतना से प्रेरित कर्म।

कांट के अनुसार केवल तीसरे प्रकार का कर्म ही परम शुभ या नैतिक शुभ रूप में है।
कर्तव्य के लिए कर्तव्य में ही आनन्द का समावेश भी है, और आनंद प्राप्त करना मनुष्य का 'परोक्ष कर्तव्य' भी माना है, और अपने लिए आनंद प्राप्त करना मनुष्य का अप्रत्यक्ष कर्तव्य है। क्योंकि अपनी स्थिति के प्रति अत्यधिक असंतोष और इच्छाओं की अवृत्ति के कारण वह अपने कर्तव्य का उल्लंघन के लिए प्रेरित हो सकता है। लेकिन आनंद का महत्व तभी स्वीकार करते है जब तक वह आप के कर्तव्य पालन में बाधक सिद्ध न होता हो। यदि कर्तव्य पालन में या कर्तव्य के लिए कर्तव्य में आनंद की प्राप्ति बांधा बनती है तो निश्चित तौर पर उसे उसे कर्म का त्याग कर देना चाहिये। आनंद या उल्लास कर्तव्य के लिए कर्तव्य के निर्धारण करने का अधिकार नहीं हो सकता।
कांट का मतंव्य है कि किसी कर्म के नैतिक मूल्य केवल उसके मूल में निहित कर्तव्य पालन करने की चेतना पर ही निर्भर है, उस कर्म से उत्पन्न होने वाले परिणामों को उत्पन्न करने की इच्छा पर नही। हमें कर्मों के परिणामों की चिन्ता किये बिना केवल कर्तव्यों का पालन करने के विचार से प्रेरित होकर ही कार्य करने चाहिये इसका कारण यह है कि कांट के अनुसार मनुष्य की कर्तव्य चेतना ही वास्तव में सम्पूर्ण नैतिकता का मूल आधार है। यहां श्रीकृष्ण भी कर्तव्य के कर्तव्य के सिद्वान्त के पूर्व ही निष्काम कर्म का सिद्धान्त प्रस्तुत करते है।
कृष्ण–

कर्माण्येवाधिवारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतु र्भूमा ते सडोडस्त्वकर्मणि।।

अर्थात्:–
कर्म करने में ही तेरा अधिकार है, फल में कमी नहीं ऐसा समझ कि फल है ही नहीं, फल की वारानावाला भी मत हो और कर्म करने में तुम्हारी अश्रद्धा भी न हो।
आगे अनासक्त कर्म योग की महिमा का उल्लेख करते हुये गीता में कहा गया है–

योग मुक्त, इस नचिरेण अधिक गच्छति।
अर्थात् निष्काम या अनाशक्त कर्म योगी पर ब्रह्म परमात्मा को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है एक साधारण मनुष्य भी यदि गीता के अनाशक्त कर्म योग को अपनाये तो वह लौकिक जगत में श्रेयशः की प्राप्त हो होता है व पारलौकिक जगत के निश्रेमराः को भी प्राप्त कर सकता है। गीता का क्रियात्मक पहलू ही अनासक्त कर्म है।
''कर्तव्य'' कर्तव्य के लिए कर्तव्य का अर्थ है कि मानव को कर्तव्य या कर्म के लिए तत्पर रहना चाहिए, बिना परिणाम की चाहत किये। इमैनुअल कांट 18वीं सदी के पाश्चात्य शिरोमणि दार्शनिक रहें।
कांट ने कर्तव्य सिद्धान्त को सही मानवीय दृष्टि से पहचाना व लागू करने की बात की।
जब तक मनुष्य सुख की भावना की पूर्णतया विस्मृत करके अपने कर्तव्य के भावना से कर्तव्य नहीं करता तब तक उसे लौकिक सुख भी नहीं मिल सकता पारलौकिक की बात ही क्या?
जैसे–खेल के मैदान से कोई खिलाड़ी खेल में रुचि लेने की अपेक्षा कत्पित विजय सुख की ओर ध्यान लगाये तो वह कभी सही ढ़ंग से खेल नहीं सकेगा।
वास्तविक आनंद खेल में इतना लीन होने से है कि व्यक्ति एक मात्र कर्तव्य के प्रति दृढ़ रहें और उसे केवल कर्तव्य पालन की स्मृति बनी रहे।

श्री संगम लाल पाण्डेयः–
''शुद्ध बुद्धि की आलोचना में कांट ने ज्ञान के विवेचन करने के बाद व्यावहारिक बुद्धि की आलोचना में कर्म का विवेचन किया और यह कांट की ''कर्तव्यशास्त्रीय'' आलोचना है और इसमें कांट ने कर्तव्य के सार्वभौमिक धारणा को स्पष्ट किया है।
कांट का कर्तव्य के लिए कर्तव्य लोक कल्याण की बात करता है, और यह कर्तव्य से विमुख होने की बात नहीं करता बल्कि फल में विमुख होने की बात करता है। और इसका आधार क्रियाात्मकता ही है।
गीता की भांति कांट का भी यही मत है कि मनुष्य की कर्मों के परिणामों की चिंता किये बिना केवल अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए क्योंकि कर्तव्य पालन के विचार से प्रेरित कर्म का ही नैतिक मूल्य है दूसरे शब्दों में कांट के मतानुसार जब मनुष्य केवल कर्तव्य के लिए अपने कर्तव्य का पालन करता है किसी तरह का अन्य कोई उद्देश्य नहीं होता तब व वास्तव में शुभ कर्म है। कांट के कर्तव्य की वर्तमान उपदियता।
जहां तक मेरा दृष्टिकोण है कांट के कर्तव्य के लिए कर्तव्य

सिद्धान्त को जन मानस तक लागू होने लगे तो जैसे–आत्महत्या, चोरी, बलात्कार, कलुपित, भावना जैसी घटनाएं जो कहीं न कहीं कर्म व कर्तव्य से विमुख होने के कारण हो रही है निकट भविष्य में न होगी।

आपका कर्तव्य के लिए कर्तव्य है कि आपको अपना जो जीवन मिला है कर्म करते हुए उसे अनाशक्त भाव से कर्म कीजिये अगर जन सामान्य इसे अपने जीवन में लागू करे तो कभी उसे दुःख की अनुभूति ही नही होगी।

अगर इसे जीवन दर्शन में अपने लागू की तो मनोवैज्ञानिक रूप से भी आनन्द की प्राप्ति ही होगी।

''कर्तव्य के लिए कर्तव्य'' भाव से कर्म करने पर वह दुख में उद्विग्न (दुखी) नहीं होता, सुख में आसक्त नहीं होता उसकी बुद्धि स्थिर है। वह सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित और अहंकार रहित, स्पृटा रहित व्यवहार करके शान्ति को प्राप्त होता है, यह स्थिति ब्रह्म की प्राप्त हुए पुरुष की स्थिति और इसको प्राप्त होकर वह मोहित नहीं होता है और अंतकाल में भी निर्माण/मोक्ष या मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

कांट का कर्तव्य के लिए कर्तव्य सिद्धान्त एक प्रकाश स्रोत की तरह है जो हमारी अपनी स्मृति का हिस्सा तो है पर अचेतन या अवचेतन में पहुँच जाने के कारण पहुँच से दूर ली गई, जिस प्रकार प्रातः सूर्य के प्रकाश से कुहरी का धुंध हट जाता है।

संदर्भ

1. स्काट, जे0 डब्ल्यु0 (1924), कांट आन दि मारल लाइफ, न्यूयार्क द मैकमिलन कपनी
2. बेक, एल0डब्ल्यू (1960), ए कमेन्ट्री आन कांटस क्रिटिक आफ प्रैक्टिकल रीजन, शिकागो
3. मिश्रा प्रो0 सभाजीत (1987), कांट का दर्शन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ
4. पाण्डेय प्रो0 संगम लाल–कांट का दर्शन पृ0 42–50
5. श्री अरविन्दारे–एसे ऑन द गीता, आर्य पब्लिकेशन हाउस, कलकत्ता।